16 संस्कार (हिन्दु धर्म) और संगीत

जगपाल सिंह
शोध छात्र
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
मेरठ
ईमेल: jagpaliaggi@gmail.com

डॉ0 वन्दना अग्रवाल
एसो0 प्रोफे0,
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

जगपाल सिंह
डॉ0 वन्दना अग्रवाल

16 संस्कार (हिन्दु धर्म) और संगीत

Artistic Narration 2021,
Vol. XII, No. I,
Article No. 16 pp. 094-100

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-1-jan-june-2021/

सारांश

हिन्दु धर्म की मान्यता के अनुसार हमारे महापुरुषों ने तथा ऋषि–मुनियों ने मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक 16 संस्कारों का जिक्र किया है अर्थात् मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन में अलग–अलग अवस्था में शुद्धिकरण की आवश्यकता पड़ती है। संस्कार करना अर्थात् शुद्धिकरण करना। इन्हीं 16 संस्कारों में संगीत भी समाहित है जैसाकि हम सब जानते ही हैं कि बिना संगीत सब अधूरा सा जान पड़ता हैं। जन्म के समय किस प्रकार उत्सव मनाये जाते हैं। गाना–बजाना–नाचना सभी होता है। तरह–तरह की मिठाईयां एवं पकवान बनाये जाते हैं और जन्मोत्सव को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है यहाँ संगीत न हो, ऐसा हो सकता है क्या। इस शोधपत्र में यही बताया गया है कि किस प्रकार संगीत, 16 संस्कारों में समाहित है।

1 संस्कार–*अगर सामान्य भाषा में कहें तो इसका अर्थ है कि किसी को संस्कारों से परिपूर्ण या शुद्ध करके उपयुक्त बनाना। जिस प्रकार हम किसी विकृत वस्तु को किन्हीं विषेश क्रियाओं द्वारा अच्छा एवं उत्तम बना देते हैं उसी प्रकार किसी साधारण से मनुष्य को विशेष धार्मिक प्राक्रियाओं द्वारा श्रेष्ठ बनाना ही संस्कारित करना या सुसंस्कृत करना है।*

2. ***संगीत*** *–संगीत को हम सभी भली प्रकार से जानते हैं या यूँ भी कह सकते हैं कि गायन (गाना), वादन (बजाना) और नृत्य (नाचना) के समूह अर्थात् मिला– जुला रूप संगीत कहलाता है। इसी विषय में शारंगदेव जी ने लिखा भी है :–''गीतं वाद्यं नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते''।*

3. उत्सव –*इसका सीधा सा अर्थ है किसी कार्य को उत्साह के साथ मनाना। वही उत्सव कहलाता है। इसे अंग्रेजी भाषा में Function भी कहते हैं।*

4. हिन्दु धर्म *–जब से हमारी सृष्टि बनी है तब से लेकर अब तक धर्म इस धरती पर अनेक नामों से जाना जाता है जैसे – हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि ये मुख्य धर्म हैं जिनमें हिन्दु धर्म (सनातन) सबसे प्राचीन माना जाता है। इसी धर्म ने 16 संस्कारों को मान्यता दी है।*

मुख्य शब्द : *संस्कार, संगीत, उत्सव, हिन्दु धर्म।*

प्रस्तावना

हमारी भारतीय संस्कृति में 16 संस्कारों को मान्यता दी गई है। कहा जाता है कि यदि इन सोलह संस्कारों के हिसाब से जीवन यापन किया जाए तो मनुष्य जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इन सोलह संस्कारों में उपनयन संस्कार को अधिक महत्ता दी गई है क्योंकि इसके साथ ही बालक ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करता है। यदि ब्रह्मचर्य के नियमों का ठीक से पालन किया जाए तो जीवन में आयु और आरोग्यता प्राप्त होती है। 'संस्कार' एक संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका सामान्य सा अर्थ है, मन, वचन और कर्म से शरीर को पवित्र करना। व्यक्तित्व निर्माण में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

गर्भस्थ शिशु से लेकर मृत्युपर्यन्त जीव के मन, वाणी और कर्मों का शोधन विधिक क्रियाओं व मंत्रों से करने को संस्कार कहा जाता है। इन सोलह संस्कारों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं :–

1. गर्भाधान संस्कार, 2. पुंसवन संस्कार, 3. सीमन्तोन्नयन संस्कार, 4. जातकर्म संस्कार, 5. नामकरण संस्कार, 6. निष्क्रमण संस्कार, 7. अन्नप्राशन संस्कार, 8. मुंडन संस्कार, 9. कर्णबेधन संस्कार, 10. विद्यारंग संस्कार, 11. उपनयन संस्कार, 12. वेदारंभ संस्कार, 13. केशांत संस्कार, 14. सम्वर्तन संस्कार, 15. विवाह संस्कार, 16. अन्त्येष्टि संस्कार।

संस्कारों से ही मनुष्य सभ्यता का हिस्सा बना रहता है। लेकिन आजकल अपने मतानुसार भी मनुष्य संस्कारों को मनाते हैं जो वेद विरुद्ध हैं।

1 गर्भाधान संस्कार और संगीत

16 संस्कारों में गर्भ संस्कार महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। चिकित्सा विज्ञान यह स्वीकार कर चुका है कि गर्भस्थ शिशु एक चैतन्य जीव की ही तरह व्यवहार करता है और वह सुनता और ग्रहण करता भी है। गर्भस्थ शिशु को यदि माता सुन्दर व मधुर व संस्कारित संगीत का रसास्वादन अर्थात् सुने तो उस शिशु पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव 'महाभारत' महाकाव्य से भी समझा जा सकता कि किस प्रकार अर्जुन अपनी पत्नि को चक्रव्यूह तोड़ना और उससे निकलने की कथा सुना रहे थे और उनकी पत्नि के सो जाने के कारण अभिमन्यु पूर्ण कला नहीं सीख पाये थे। इसलिए जब बच्चा गर्भ में हो तो माता को भजन, कीर्तन, पूजा–पाठ आदि का श्रवण करना चाहिए जिससे उत्तम संस्कार युक्त संतान की उत्पत्ति हो सके।

2 पुंसवन संस्कार

इस संस्कार में गर्भवती महिला के नासिका छिद्र से एक विशेष औषधि को उसके अन्दर पहुँचाया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान गिलोय वृक्ष के तने से कुछ बूँदें निकालकर मंत्रोच्चारण के साथ गर्भवती स्त्री की नासिका पर लगाया जाता है। मंत्रोच्चारण की मधुर संगीत लहरी का गर्भस्थ शिशु पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हमारे विद्वानों ने गिलोय के रस को रोगनाशक माना है।

3 सीमंतोन्नयन संस्कार

सीमन्त और उन्नयन शब्दों से मिलकर बना है यह शब्द। जिसका अर्थ है बालों को ऊपर उठाना। यह संस्कार लगभग आठवें महीने में किया जाता है। इस संस्कार का यह भी महत्व है कि इससे शिशु का भी मानसिक विकास होता है क्योंकि आठवें माह में वह माता को सुनने व समझने लगता है। पति को चाहिए कि गूलर की टहनी लेकर पत्नि की माँग निकालें और जरावस्था के पश्चात् भी शिशु को

दीर्घायु होने की कामना करते हुए उस संस्कार को पूर्ण करें। विद्वान ब्राह्मणों द्वारा मंत्रोच्चारण व मंगल कामना के गीत यहाँ भी प्रस्तुत किये जाते हैं। तत्पश्चात् महिला को किसी बुजुर्ग महिला का आशीर्वाद लेना चाहिए।

4 जातकर्म संस्कार

हमारे ऋषि मुनियों ने मानव–जीवन को मर्यादित बनाने के लिए संस्कारों का आविष्कार किया था। केवल धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इन संस्कारों का हमारे जीवन में महत्व है। इस संस्कार में सोने की श्लाका लेकर उसमें विषम मात्रा में शहद और घी को मिलाकर चटाया जाता है। जिससे बच्चे के रसपान सम्बन्धी दोष, सुवर्ण वातदोष, मूत्र एवं रक्त दोष आदि सभी दूर हो जाते हैं। इस संस्कार में संगीतमय मंत्रोच्चारण किये जाते हैं।

5 नामकरण संस्कार

शिशु के जन्म के लगभग 10 दिन बाद नामकरण संस्कार किया जाता है। विद्वानों का मानना है कि शिशु के जन्म से सुतक प्रारम्भ हो जाता है जो ब्राह्मणों में 10 दिन, क्षत्रियों में 12, वैश्य में 15 और शूद्रों में एक ही महीने का माना जाता है (ब्राह्मणों के अनुसार)।

6 निष्क्रमण संस्कार

निष्क्रमण संस्कार तब किया जाता है जब जातक को पहली बार घर से बाहर निकाला जाता है। इस संस्कार में जातक के स्वास्थ्य व उसकी दीर्घायु की कामना की जाती है। साथ ही साथ सूर्य देवता के दर्शन भी कराये जाते हैं। इस संस्कार के समय भी महिला संगीत व ब्राह्मणों द्वारा वैदिक मंत्रों का गायन किया जाता है। शिशु के लिए सूर्य का प्रकाश कल्याणकारी व हृदय में स्वच्छ वायु का संचार हो। उचित भोजनोपरान्त, दान–दक्षिणा आदि के साथ यह संस्कार सम्पन्न किया जाता है।

7 अन्नप्राशन संस्कार

जैसा कि इसके नाम से ही विदित है कि अन्न ग्रहण करना। यह वह संस्कार है जब शिशु को पारंपरिक विधियों के साथ पहली बार अनाज खिलाया जाता है। इससे पहले शिशु केवल अपनी माता के दूध पर ही निर्भर रहता है। शिशु जब 6–7 महीने का हो जाता है तो यह संस्कार किया जाता है। अन्न ही मनुष्य का स्वाभाविक खाना है उसे सम्मान के साथ प्रभु का प्रसाद समझकर ग्रहण करना चाहिए। इस संस्कार में भी वैदिक मंत्रों का गायन ब्राह्मणों द्वारा किया जाता है अर्थात् संगीतमय वातावरण होता है।

8 मुंडन संस्कार

इस संस्कार को मुंडन अथवा चूड़ा संस्कार भी कहा जाता है। यह संस्कार हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों में प्रचलित है जिसे मुस्लिम धर्म वाले अकीका के नाम से जानते हैं। आम धारणा है कि इस संस्कार में बच्चे की आयु, बल, बुद्धि आदि का विकास होता है। प्राचीन काल वैदिक काल में यह संस्कार 5 वर्श का बालक हो जाने पर किया जाता था। ऐसा भी कहा जाता है कि मुंडन संस्कार से पूर्व जन्म के शापों का मोचन हो जाता है। इसका एक वैज्ञानिक तर्क यह भी है कि जब शिशु का जन्म होता है तब उसके बालों में बहुत से कीटाणु और बैक्टीरिया पाये जाते हैं और सिर की त्वचा में भी गन्दगी होती है जिसके परिणामस्वरूप इस संस्कार से वह स्वच्छ और निर्मल हो जाता है। यहाँ भी वैदिक मंत्रों

के गायन का महत्व है।

9 कर्णबेधन संस्कार

इसका अर्थ है कर्ण अर्थात् कान बेधना/छेदना। इसका सामान्य अर्थ हुआ कान छेदना। इसको श्रवणन्द्रि भी कहा जाता है। इस संस्कार को उपनयन संस्कार से पूर्व किया जाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि जिस बच्चे का कर्णवेधन संस्कार ना हो तो वह अपने प्रियजनों का अंतिम संस्कार करने में असफल रहता है। यह संस्कार 12 या 16वें दिन, या छठे, सातवें और आठवें मास में भी कराया जाता है या 3,5 या 7वें साल में भी इस संस्कार को कराया जा सकता है। इस संस्कार को कराते समय विद्वान ब्राह्मण बच्चे के कान में मंत्र फूंकता है और महिलाएँ मीठे गीत अर्थात् लोरी का गायन करती हैं। पहले दायें फिर बायें कान का छेदन किया जाता है। वहीं कन्याओं में पहले बायां फिर दायां कान छेदा जाता है। इसके बाद कन्या की बायीं नासिका में भी छेदन किया जाता है। यह संस्कार आशाढ़ शुक्ल एकादश से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक करवाने का विधान है।

10 विद्यारम्भ संस्कार

इस संस्कार में बच्चे को अक्षर ज्ञान दिया जाता है। सर्वप्रथम भगवान गणेश, सरस्वती की पूजा कराई जाती है। तत्पश्चात् कलम स्याही, पत्र अथवा पट्टी जिस पर लिखना है उन सबकी विधिवत् पूजा करवाई जाती है। अन्त में अपने गुरू को प्रणाम कर अपनी विद्या का भार उनको सौंप देता है तथा गुरू भी उसको अपना शिष्य ग्रहण कर लेता है। ब्रह्मचर्य अर्थात् 25 वर्ष की आयु तक उस पर गुरू का आधिपत्य हो जाता है। यदि सही शिक्षा ना हो तो यह समाज कुरीतियों, दुष्प्रचार, अराजकता आदि का केन्द्र बन जायेगा। इसीलिए अच्छे समाज के निर्माण के लिए उसे उचित शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है। इस संस्कार के समय में भी वैदिक मंत्रों का गायन किया जाता है।

11 उपनयन संस्कार

उपनयन संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार के नाम से भी जाना जाता है। कुछ लोग जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। कहा जाता है कि इस संस्कार को करने से बच्चे की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति होती है। इस संस्कार में गायत्री मंत्र की दीक्षा देकर उसके बाद जनेऊ धारण करवाया जाता है। अपनी–अपनी धार्मिक प्रवृत्ति के आधार पर वह तत्पश्चात् वेदों का अध्ययन भी करता है। उम्र के आठवें वर्ष से 11 वर्ष की अवस्था तक यह संस्कार करा लेना चाहिए ऐसा विद्वानों का मत है। आजकल इस संस्कार का रुप बदल गया है। अब माता–पिता आंगनबाड़ी केन्द्र, प्ले स्कूल आदि में दाखिला करा देते हैं और निजी स्कूलों में तो 3–4 वर्ष के बच्चे का दाखिला हो जाता है और तो और राजकीय विद्यालयों में भी 6 वर्ष की अवस्था से ही बच्चों की शिक्षा प्रारम्भ कर दी जाती है। इस संस्कार में भी गायत्री मंत्र का उच्चारण लयात्मक अर्थात् गायन स्वरुप ही बच्चे के कान में सुनाया अर्थात् दोहराया जाता है।

12 वेदारम्भ संस्कार

हमारे वेदों में भूगोल, ब्रह्माण्ड, औषधि, चिकित्सा, रसायन, भौतिकी आदि का वर्णन किया गया है। इस संस्कार मे बालक को उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है जो लगभग 25 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था तक वह गुरू के आश्रम में ही रहता है और ब्रह्मचर्य पालन की कठोर शिक्षा दी जाती है। ऊँ मंत्र के उच्चारण के बाद वेदारम्भ शुरू किया जाता है। यहाँ संगीतमय मंत्रों का उच्चारण किया जाता

था और किया जाता है आज भी।

13 केशान्त संस्कार

इसका सीधा सा अर्थ है बालों का अन्त करना। शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह संस्कार कराना जरूरी था। साथ ही गणेशादि देवों का पूजन, यज्ञादि का आयोजन भी किया जाता था। इस संस्कार के साथ ही जातक को ब्रह्मचर्य अवस्था से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया जाता था। वेद–पुराणों में पारंगत होने के बाद समावर्तन संस्कार से पहले केशान्त कर उसे स्नातक की उपाधि दी जाती है। संगीत का प्रयोग इस संस्कार में भी किया जाता था।

14 समावर्तन या सम्वर्तन संस्कार

शिक्षा पूर्ण होने के बाद जब जातक की गुरूकुल से विदाई दी जाती है और गुरू जातक को आगामी जीवन के लिए उपदेश देकर विदा करता है तो इसी को समावर्तन संस्कार कहा जाता है। यहाँ गुरू शिष्य को गृहस्थ जीवन की चुनौतियों, उत्तरदायित्व, अधिकार, समाज के प्रति कर्त्तव्य इत्यादि का ज्ञान देकर उसे विदाई देता है। यहाँ भी संगीत का प्रयोग, देवपूजन आदि का विधान होता था।

15 विवाह संस्कार

विवाह शब्द से तो शायद कोई वंचित नहीं होगा। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक यह संस्कार बड़े जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस संस्कार से ही मनुष्य का गृहस्थ जीवन प्रारम्भ होता है। विद्वानों ने इसको गृहस्थ आश्रम नाम से भी पुकारा है। वैदिक काल में 25 वर्ष से कम अथवा अधिक आयु हो जाने पर भी विवाह संस्कार किया जाता है। विवाह में संगीत का प्रयोग न हो ऐसा तो सम्भव नहीं। भगवान भोले नाथ की शादी से लेकर आज तक हर धर्म सम्प्रदाय में इस संस्कार को मनाया जाता है और संगीत का खूब प्रयोग किया जाता है जैसे – मेंहदी के गीत, हल्दी के गीत, विदाई के गीत, पंजाबी ढोल, सपेरे की बीन, ताशा, बैण्ड–बाजा, डीजे, आर्केस्ट्रा का प्रयोग संगीत के लिए किया जाता है और यह संस्कार सम्पूर्ण किया जाता है। इस संस्कार के बाद से ही जातक का असली जीवन प्रारम्भ होता है।

16 अन्त्येष्टि संस्कार

16 संस्कारों में इसे अंतिम संस्कार माना जाता है। केवल यही वह संस्कार है जिसे मरणोपरान्त उसके परिजनों द्वारा किया जाता है। शव जलाने के बाद बची अस्थियों को आमतौर पर गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है। मृत आत्मा की शान्ति के दान, पुण्य और ब्राह्मण भोज भी कराया जाता है, अगर संगीत की बात करें तो शव ले जाते समय ढोल बजाये जाते हैं कुछ व्यक्ति तो बैण्ड भी बजवाते हैं अर्थात् मंत्रों का उच्चारण भी गयात्मक ही होता है अर्थात् लयात्मक व स्वर में होता है।

उद्देश्य

इस शोधपत्र को लिखने का उद्देश्य यही है किस प्रकार वैदिक काल में मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन में 16 संस्कारों का महत्व था। इन्हीं संस्कारों से सुसंस्कृत व्यक्ति किस प्रकार एक सभ्य समाज के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी प्रकार इस शोधपत्र को लिखने का एकमात्र उद्देश्य यह है कि मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन में संगीत एक परछाई की तरह उसके साथ–साथ चलता है। जन्म से मृत्यु तक संगीत मनुष्य के जीवन में रचा बसा रहता है। शिशु अगर जन्म के समय ना रोये तो उसे ठीक नहीं

माना जाता है और उसको हल्के से थपकी देकर रूलाया जाता है। उसका रोना ही नाद अर्थात् संगीत की उपस्थिति दर्ज कराता है। अन्ततः इसका उद्देश्य यही है कि जगत के समस्त व्यक्ति इन 16 संस्कारों का उपयोग कर संगीत का आनन्द लें और अपने और इस समाज में एक सभ्य समाज का हिस्सा बनें।

परिणाम

हमने देखा कि किस प्रकार वैदिक काल से लेकर अब तक इन 16 संस्कारों का महत्व चला आ रहा है। मेरा मानना है कि हम सभी को इन 16 संस्कारों का सुचारु रुप से पालन करना चाहिए क्योंकि मुझे कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि इन 16 संस्कारों का प्रयोग करने से समाज को कोई हानि या नुकसान हो सकता है। इन्हीं संस्कारों में संगीत भी बराबर का हिस्सेदार है क्योंकि बिना संगीत कोई भी संस्कार, उत्सव, त्यौहार, खेल आदि सब सूने जान पड़ते हैं। वर्तमान काल में कुछ ही संस्कार प्रचलन में देखने को मिलते हैं जैसे विवाह, अन्त्येष्टि, नामकरण, मुण्डन, कर्णछेदन संस्कार मात्र कन्याओं का रह गया है आदि। अगर हम अपनी संतानों को संस्कारित अर्थात् सुसंस्कृत करना छोड़ देंगे तो इस समाज को एक बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है जो जगत कल्याण के लिए ठीक नहीं होगा।

अगर देखा जाए तो यह कोई कहने की बात नहीं है। प्रत्येक मनुष्य का संस्कारित होना जरुरी है क्योंकि संस्कारित व्यक्ति ही दूसरों को भी संस्कारित कर सकता है। हिन्दु धर्म ही नहीं प्रत्येक धर्म में संस्कारों को मान्यता दी गई है। संस्कार का सीधा सा अर्थ मेरे विचार से यह है कि सुबह सोकर उठने से लेकर रात्रि सोने तक हम जितने भी क्रियाकलाप करते हैं वे सब संस्कारित होने चाहिए जैसे कि तन और मन की स्वच्छता जरुरी है। तन की स्वच्छता से हम भली प्रकार परिचित हैं। मेरा आशय मुख, जिव्हा, नासिका, कर्ण, नेत्र अर्थात् पूर्ण शरीर से है, क्योंकि स्वच्छ व स्वस्थ षरीर में ही स्वच्छ हृदय का वास होता है। इसी प्रकार मन की सफाई के लिए संध्या वन्दन, चिंतन, कीर्तन, भजन, जप, तप, दान आदि का होना जरुरी है। हम सब जानते हैं कि भजन, जप, तप, दान, पूजा–पाठ आदि के करते रहने से हमारा मन निर्मल रहता है। मन निर्मल होगा तो उस मन में विचार भी निर्मल ही पैदा होंगे। ऐसा व्यक्ति इस संसार को सुव्यवस्थित करने में अपना पूरा सहयोग देता है। ऐसा व्यक्ति एक सभ्य समाज का निर्माण करता है और आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार ही प्रदान करता है।

अंत में इस शोधपत्र को प्रस्तुत करने का एकमात्र परिणाम यही निकलता है कि प्रत्येक व्यक्ति का संस्कारित होना जरुरी है तभी एक सफल समाज का निर्माण हो सकता है। संस्कार आज भी 16 ही हैं लेकिन उन्होंने दूसरा रुप ले लिया है अर्थात् ये दूसरे रुपों में मनाये जाने लगे हैं। मन, वाणी और कर्म से शुद्ध व्यक्ति ही पूर्ण संस्कारित माना जाता है यही संस्कार है।

उपसंहार

हम जानते हैं कि मनुष्य की सम्पूर्ण आयु को लगभग 100 वर्ष का माना गया है। जिन्हें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास, इन चार आश्रमों में बांटा गया है। प्रत्येक आश्रम 25–25 वर्ष का माना गया है। इस सम्पूर्ण जीवन में मनुष्य को संस्कृत अर्थात् संस्कारित करने के लिए 16 संस्कारों का विधान है जिनको पालन करके एक सुसंस्कृत व सभ्य व्यक्ति का निर्माण होता है जो एक सभ्य समाज का निर्माण करता है।

इन्हीं 16 संस्कारों में संगीत भी अपना एक विशेष महत्व रखता है। कोई भी संस्कार ऐसा नहीं है जिसमें संगीत का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग न हुआ हो। क्या बिना संगीत के हम इस आनन्दमयी जीवन की कल्पना कर सकते हैं? नहीं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. google.com/PreetiJha/Thursday-07May 2015, 12.35 pm (IST)
2. google.com/डॉ0 जेम्स निकोलस/बुधवार–2021/WEBDUNIA
3. https//hindi.astrologi.com>artile/3 june 2017
4. https//www.jagran.com>spiritual.-02 Aug. 2020
5. m.punjabkesari.in/dharm/news/mundane-sanskar-1314670, 2021-01-16T 13:10:09:037
6. गीत निर्झरी–सुमति मुटाटकर, संस्करण – प्रथम–2002, तृतीय–2012, प्रकाशक – कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5–21ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
7. संगीत दर्शन, लेखक – श्रीमति विजयलक्ष्मी जैन, संस्करण – प्रथम–2002, प्रकाशक–राजस्थानी ग्रन्थागार, प्रकाशक एवं वितरक, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर–342001 (राजस्थान)
8. पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की संगीत–परम्परा हवेली संगीत, लेखक–प्रो0 सत्यभान शर्मा, संस्करण–प्रथम–1999, प्रकाशक–राधा पब्लिकेषन, 4348/4बी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
9. सामवेद–सामवेद का सुबोध भाष्य, भाश्यकार : डॉ0 श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, संस्करण–1985, प्रकाशक–बसन्त श्रीपाद सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी जिला– बलसाड़
10. संगीत रत्नावली, लेखक – अषोक कुमार 'यमन', संस्करण–2008, प्रकाशक– अभिशेक पब्लिकेशन